ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान

उज्वला विठ्ठल फडतरे

शोधार्थी, प्रा. रामकृष्ण मोरे कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आकुर्डी, पुणे-44

डॉ. सजित खांडेकर

शोध निर्देशक, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, भोसरी, पुणे

शोध संक्षेप :

साहित्यिक विकास सदियों धीरे-धीरे होता चला आ रहा है और आगे भी चलता रहेगा। स्वातंत्र आंदोलन के माध्यम से भारतवासियोंपर सदियों से होते आए ब्रिटिश शासन का विनाश करने के लिए साहित्य का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हिंदी साहित्य के काव्य विधा के जरिए कवि-कवयित्रियों ने जनमानस में ब्रिटिश शोषण के प्रति जागृति लाने एवं राष्ट्रीय चेतना का संचार करने हेतु जो प्रयास किये हैं, वे शिरोधारी हैं। 'हिंदी काव्य के जरिए स्वाधीनता आंदोलन एवं स्वाधीनता आंदोलन के जरिए काव्य का विकास' इनकी यथार्थता का परिचय देकर समाज को विकास की नई दिशा की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य :

संपूर्ण भारत में आजादी का अमृत महोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है।यहीं आजादी प्राप्त करने के लिए कईयों ने विविध माध्यमों से अपने देश के लिए योगदान साझा किया; तो कईयों ने अपने बलिदान दिए।आजादी के पूर्व हुए स्वाधीनता आंदोलन की नई पीढ़ी को पहचान कराने हेतु एवं स्वाधीनता आंदोलन के लिए हिंदी साहित्य की काव्य धारा के योगदान को स्वतंत्रता आंदोलन के पक्ष में उजाला देना,उनके कार्य से प्रेरणा पाकर समाज के मनपटल पर राष्ट्रप्रेम की भावना का दृढ़िकरण करना तथा ऊपरी सभी के कार्य से प्रेरणा पाकर देश को आगे बढ़ाने का सफल प्रयास इस शोध पत्रिका द्वारा किया गया है।

प्रस्तावना :

भारत के विभिन्न प्रदेशों में स्वाधीनता आंदोलन के विकासक में हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी कविताओं ने सीमित प्रदेशों की सीमा लाँघकर राष्ट्रोन्मुख बनकर राष्ट्रीयता की पहचान प्राप्त कर ली। स्वतंत्रता के प्रति लोगों में चेतना का संचार करने हेतु देशभक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने हेतु काव्य रचनाएँ रची जाने लगी।आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी से प्रभावित होकर मैथिलीशरण गुप्त जी साहित्य को केवल मनोरंजन ही नहीं बल्कि जीवन के उद्देश्यों से (स्वाधीनता) जोड़ने की कोशिश करते हुए कहते हैं :

केवल मनोरंजन ही नहीं कवि का कर्म होना चाहिए।

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

बल्कि उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ।।

स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान :

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य के पूर्व स्वाधीन शब्द का अर्थ समजते है-

स्वाधीन का शाब्दिक अर्थ है – स्व+अधीन,अर्थात 'अपने अधीन होना'।

स्वाधीनता का अर्थ है 'आजादी',अर्थात गुलामी से मुक्ति;किन्तु स्वाधीनता का अर्थ स्वेचछाचारिता नही।

स्वाधीनता आंदोलन किसी अधीन देश द्वारा विदेशी सत्ता या उनकी गुलामी से मुक्त होने के लिए किया गया सशस्त्र या निःशस्त्र अभियान या आंदोलन।

भारतीय इतिहास में स्वाधीनता आन्दोलन एक युगांतकारी घटना है। हम एवं हमारा देश कई वर्षों तक परतंत्र में रहा। भारत में १८ वीं शताब्दी की मध्य में अंग्रेजों ने उनका शासन स्थापित किया और उनका दमनचक्र भी ! भारतीयों पर अन्याय, दुर्व्यवहार, दुर्नीति ने देशवासियों के पटल पर स्वाधीनता की नयी जागृति निर्माण की।

साहित्य की दृष्टि से यहीं आधुनिक काल 19 वीं शताब्दी के साथ शुरू हुआ ;इसका प्रारंभ भारतेन्दु युग से होता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से राष्ट्रीयता एवं स्वाभिमान की इच्छा विकसित हो गई।एक ओर लोग रूढ़ि , परंपराओं से ,अंधविश्वासों से एक-एक कदम दूर जा रहे थे ; तो दूसरी ओर राष्ट्रीयता को वे हृदय में समाहित कर रहे थे।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन ऐतिहासिक घटनाओं की एक श्रृंखला थी ;जिसका अंतिम उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करना था । 1857 की क्रांति से स्वाधीनता आंदोलन की शुरुआत मंगल पांडे जी ने की। चारों ओर देश प्रेम की लहर महक गई।

कविताओं में राष्ट्रप्रेम की कविताएँ रची जाने लगी ।अंग्रेजों के खिलाफ उनके शासन में हुई भारत की दुर्दशा को कविताओं की माध्यम से लोगों के सामने लाये जाने लगी। भारतेन्दु युग का उदय हिंदी कविताओं के लिए नवजागरण के संदेशवाहक युग के रूप में हुआ ।यह हर क्षेत्र के लिए पुनर्जागरण का युग था। सामाजिक, राजकीय , सांस्कृतिक , धार्मिक , साहित्यिक शिक्षा क्षेत्र में नयी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला। भारतेन्दु युगीन कवियों ने भारतीय लोगों के हृदय में देशप्रेम की ज्योत जगाई ।भारतेंदु की 'विजयनी विजय वैजयन्ती',प्रेमघन की 'आनन्द अरुणोदय',प्रतापनारायण मिश्र की 'महापर्व' और 'नया संवत', रामकृष्णदास की 'भारत बारहमासा' और 'विनय' ये शीर्षक कविताएँ देशप्रेम से ओतप्रोत हैं।

भारतेन्दु जी ने अपनी एक कविता में अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे शोषण का चित्र प्रस्तुत किया है :

भीतर भीतर सब रस चूसै,
हँसि हँसि के तन मन धन मुसै।
जाहिर बातों में आती तेज,
क्यों सखि साजन नहिं अंग्रेज।

हिंदी में जागरण की सबसे प्रमुख विशेषता थी-जनता में स्वातंत्र्य चेतना का जागृत होना। इस नवजागरण का पहला चरण 1857 का विद्रोह था ।दूसरा चरण भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी से तथा तीसरा चरण महावीरप्रसाद द्विवेदी से शुरू हुआ ।भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को गति एवं दिशा देने में द्विवेदी जी का विशेष योगदान रहा।

नाथूराम शर्मा 'शंकर' जी ने निम्न पंक्तियों में देश प्रेम से प्रभावित होकर देश के लिए प्राण न्योछावर करने की प्रेरणा दी है :

"देशभक्ति वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा ।।"

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है ।उनके द्वारा सृजन किया गया 'भारत भारती' को देशभक्तियुक्त रचना के कारण अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था। भारत को संपूर्ण संसार में सोने की चिड़िया से पहचाना जाता था ; जहाँ अभी प्रचंड निर्धनता नृत्य करती है। देश की दुर्दशा के कारण अत्यंत घायल होकर गुप्त जी यहाँ स्वदेश प्रेम को 'वर्तमान खंड' में लिखते हुए कहते हैं :

राहत प्रयोजन से प्रचुर पूरित जहाँ धन-धान्य था ,
जो 'स्वर्ण भारत' नाम से संसार में सम्मान्य था ,
दारिद्रय - दुर्धर अब वहाँ करता निरन्तर नृत्य है,
आजीविका - अवलम्ब बहुधा भृत्य का ही कृत्य है।

भारतेंदु युग की मूलभूत उपलब्धि यह है कि इसके पूर्व रहने वाला काव्य का उद्देश्य श्रृंगार में काव्यधारा की जगह समाज एवं राष्ट्रीय विचारधाराओं ने लिया, जिसका पूर्णता झुकाव आगे चलकर द्विवेदी युग में दिखाई दिया। भारतेन्दु युग के बाद की कविताएँ थोड़ी आसान हो गईं।

श्रीधर पाठक जी ने मनोयोग से 'भारतोत्थान', 'भारतप्रशंसा'आदि देशभक्तिपर कविताओं में देश का गौरव गान किया है।

भक्त तथा देशप्रेमी कवि के रूप में पहचाने जाने वाले कवि सत्यनारायण 'कविरत्न' जी ने सहज मधुर ब्रजभाषा में लिखित भक्ति पदों में 'भ्रमरदूत' में देश की दशा को एवं परंपरागत प्रसंग में भी देश प्रेम को समाया है :

जे तजि मातृभूमि सों ममता होत प्रवासी।
तिन्हें बिदेसी तंग करत दै विपदा खासी ॥
नहिं आये -निरदय दई , आये _ गौरव जाय।
साँप छछून्दर गति भई, मन की मन अकुलाय ॥
रहे सब के सबै ॥

द्विवेदी युग की राष्ट्रीयता यह अति उदार एवं व्यापक है। देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देकर तत्कालीन स्वाधीनता आंदोलनों को बल प्रदान किया है।

आधुनिक काल का जीवन समय के गति के साथ-साथ परिवर्तनशील एवं विकासशील है l आधुनिक काल के साथ-साथ साहित्य में भी पुरानी काव्य पद्धति छोड़कर नयी पद्धति के निर्माण का आरंभ हो गया था।

विवेच्य काल भारतीय जीवन के लिए संघर्षमय था। देश अंग्रेजों की जाल में फंसा था; जिनकी शासन पद्धति प्राचीन काल के विदेशियों से अलग थी। स्वाभाविक ही इनके प्रति बढ़ता हुआ आक्रोश स्वाधीनता संग्राम के रूप में फूट पड़ा। माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी ,बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और सुभद्राकुमारी चौहान इन्होंने केवल राष्ट्रप्रेम की काव्यधारा को प्रवाहित नहीं किया बल्कि वे स्वयं देश के स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित भी हुए।

इस युग में देश के सर्वसामान्य नेता महात्मा गांधी जी थे ;जो अहिंसा एवं सत्य पर आधारित असहयोग के रूप में आगे आए;जो मूल्य स्वाधीनता संग्राम के प्रेरक मूल्य थे।

माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कैदी और कोकिला' शीर्षक कविता में अपने देशभक्ति की अनुभूति की सच्चाई व्यक्त करने का प्रयास किया है :

'क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना ?
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज्य का गहना।
कोल्हू का चर्रक चूं ? जीवन की तान।
गिट्टी पर लिक्खे अंगुलियों ने गान ?
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूआं।'

काफी समय से शोषित भारतीय जनता के मन में जागरण एवं संघर्ष के भाव का संचार करना आसान नहीं था। कवियों ने अपने कलम की विचारधाराओं से यह कहने की कोशिश की

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

है कि हर एक व्यक्ति यह शक्ति का स्रोत है। इसे पहचान कर आत्मविश्वास के साथ स्वाधीनता आंदोलन के संघर्ष के लिए तैयार हो जाए।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'जी ने निम्न पंक्तियों द्वारा भारत को जगाने का प्रयास किया हैं :

'ओ भिखमंगे, अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिरदोहित,
तू अखंड भंडार शक्ति का, जाग अरे निद्रा-सम्मोहित !
प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे,
अंगारों के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता धर दे।'

राष्ट्रीय कवियों ने भी राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन आदि प्राचीन चरित्रों के उदाहरण देकर जनमानस में आत्मविश्वास संचार करने का प्रयास किया। इसी अध्यात्मिकता की जोड़ देकर निराला जी ने 'दिल्ली' कविता में देश के गौरव के साथ-साथ वर्तमान स्थिति का भी चित्रण किया है :

क्या यह वही देश है,
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र चिरकुमार भीष्म की पताका
ब्रम्हचर्य - दीप्त
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में
उज्ज्वल अधीर और चिरनवीन ?-
श्रीमुख से कृष्ण के सुना थां जहाँ भारत ने
गीता गीत - सिंहनाद -
मर्मवाणी जीवन - संग्राम की-
सार्थक समन्वय ज्ञान-कर्म-भक्ति योग का ?

रामनरेश त्रिपाठी जी अपनी रचनाओं में 'होमरूल' आन्दोलन का समर्थन करते देश की स्व-राज्य की प्राप्ति हेतु की स्वाधीनता स्व-स्वाधीनता के अधिकार की आकांक्षा को दर्शाते हैं:

करेंगे क्या ले कर अपवर्ग, हमारा भारत ही सुख-स्वर्ग।
नहीं है किसी लक्ष्य पर ध्यान, चाहिए केवल स्वत्व समान ॥
इसे तज कर क्या तरु निर्मूल, करेंगे ले कर किंशुक फूल।
प्रकृत पुरुषों का जीवन-मूल, चाहिए केवल घर का रूल ॥

द्विवेदी युग के ठीक बाद छायावाद में अलग-अलग ढंग की कविताओं की सर्जना दिखती है । इसी काव्यधारा के कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान जी की कविताएँ राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत भरी हुई हैं' जो देशभक्ति की भावनाएँ विकसित करती हैं ।जनता को सरकार से सहयोग करने के लिए प्रेरित करने एवं सरकार से होने वाले दमन चक्र को सहने के लिए कभी-कभी आत्म बलिदान के लिए तैयार रहने की प्रेरणा राष्ट्रकवियों ने अपनी कविताओं में उद्धृत की हैं।

सुभद्राकुमार चौहान जी की अपनी 'त्रिधारा', 'मुकुल', 'झांसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो वसन्त' आदि कविताओं में राष्ट्रप्रेम मुखरित होता हैं। कई बार उन्हें आंदोलन में जेल भी जाना पड़ा। उनकी 'जालियाँवाला बाग में वसन्त' कविता में निर्दयी हत्याकांड की मूक वेदना भावविभोर करती हैं :

"आओ प्रिय ऋतुराज, किन्तु धीरे से आना
यह है शोक स्थान, यहाँ मत शोर मचाना
कोमल बालक मरे यहाँ, गोली खा-खा कर
कलियाँ उनके लिए चढ़ाना थोड़ी-सी लाकर।"

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी अपनी 'हुँकार', 'रेणुका','विपथगा' काव्य कृतियोंद्वारा ब्रिटिश सरकार के प्रति अपनी शब्द प्रखरता से क्रांति का आव्हान करते हुए क्रांति को नया रूप देने वाले, सपनों की राह और रोशनी से प्रकाशित 'हुंकार' संग्रह के 'अनिल - किरीट' में लिखते हैं :

'धरकर चरण विजित, शृंगों पर झंडा वही उड़ाते हैं
अपनी ही उँगली पर जो खंजर की जंग छुड़ाते हैं।'

बालकृष्ण भट जी के अनुसार साहित्य 'जनसमूह के हृदय का विकास' है और सर्जना से संभव होता है। ऐसे कहा जाता है कि द्विवेदी युग की कविताएँ भारतेन्दु युग की तुलना में

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

अधिक तीव्र,विद्रोह एवं भाव-भावनाओं वाली हैं । इसका कारण है इनका बहुर्मुखी होना । जिस दौर में यह कविताएँ लिखी गई ; उस काल, समाज का कुछ अपना महत्त्व है ; जिसका प्रभाव साहित्य पर अपने आप ही होता हैं। लोगों के समझ के साथ अपना तालमेल बिठाती है यह कविता !

निष्कर्ष:

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को ठीक समझना/जानना हो तो एक धारा से नहीं जाना जा सकता; क्योंकि कई छोटे-बड़े नायकों का अपने-अपने लिहाज से स्वाधीनता आंदोलन में अत्यधिक महत्त्व हैं। स्वाधीनता आंदोलन की काव्य में मुख्यतः प्राचीन पदी कविताओं के साथ-साथ भाव - भावनाओं की अभिव्यक्ति, सामाजिक जागरण के विचारों का भी उत्थान होता रहा ।

आज अमीरों की हवेली
होगी गरीबों की पाठशाला
धोबी पासी चमार तेली
खोलेंगे किस्मत का ताला ॥

इन काव्य पंक्तियों द्वारा आज अमीरों की हवेली गरीबों की पाठशाला तो बनेगी; स्वाधीनता राजनीति तो हो ही रही है ।उसके साथ-साथ सामाजिक स्वाधीनता काव्यपंक्तियों द्वारा भी लानी जरूरी है;जो इन काव्य विचारों के द्वारा उद्धृत होती है।

लोगों की किस्मत अज्ञान में बंद है; जो ज्ञान प्राप्त करके किस्मत का ताला खोलकर प्रगति की राह पर आरूढ़ होता समाज कई की आभासी पटल पर है ।अतः स्वाधीनता तो मिल गई, राजनीति मुक्ति तो मिल गई,परंतु अभी भी सामाजिक विषमताओं से संघर्ष कर उसे पराजित करके मुक्ति पाना अभी भी शेष है।

संदर्भ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेन्द्र, डॉ.हरदयाल, प्रामाणिक संस्करण-2022, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली
2. NTA UGC नेट/जेआरएफ सेट हिन्दी पेपर-2, अरिहंत संस्करण - 2021-22 पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

वेब संकेत स्थल-

https://www.exoticindiaart.com/book/details/contribution-of-hindi-poets-to-independence-movement-of-india-nzc008/

http://.m.wikipedia.org

आंदोलन मे हिंदी की भूमिका, vol(3), Issue -11, November 2015

Cite This Article:

फडतरे उ. व. & डॉ. खांडेकर स. ***(2024).*** *स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 69–73).

EIIRJ. https://doi.org/10.5281/zenodo.10652595